साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी चित्रण

टी. टी. लमाणी
शोधार्थी, हिंदी विभाग
कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

सारांश **:**साठोत्तरी हिन्दी महिला–कथाकारों ने अपने साहसपूर्ण मौलिक चिंतन के साथ जीवन की विषमताओं को अपनी दृष्टि से विस्लेषित किया हैं । विशेषकार भारतीय नारी–जीवन के लग–भग सभी पहलुओं को सुक्षमता के साथ चित्रित किया गया है । उपन्यास के क्षत्र में महिला–लेखन अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफल सिध्द है । इसलिए उसने स्वतंन्त्रोंत्तर भारत की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थितियों का चित्रण मूलतः नारी के संदर्भ में किया है । स्वतंत्रता के पस्चात् भारतीय कथा–लेखिकाऍं पुरुश से पीछे नहीं हैं । अपने युग की विविध समस्याओं जैसे–दांपत्या जीवन, पारिवारिक विघटन, संयुक्त परिवार, प्रेम और अंतर्जातीय विवाह, ताक, आर्थिक स्वतंत्रता, निम्न एवं मध्यमवर्गीय आदि समस्याओं से सीधा संबंध रहा हैं । अतः इन समस्याओं की अभिव्यक्ति– चित्रा मद्गला, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, मेत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, सूर्यबाला, प्रभा खेतान तथा मेहरुन्निस परवेज यह प्रमुख महिला कथाकारों ने अपनी कृतियों में यथार्थ रुप में की हैं ।

प्रस्तवाना **:**

चित्रा मुद्गल ' साठोत्तरी महिला कथाकारों में पारिवारिक समस्याओं के चित्रण में महत्वपूर्ण स्थान रखती है । इन्होंने नारी–जीवन की समस्याओं को अपने उपन्यासों में उतारा है। स्त्री की शोषण और इनके मन में धधकती हुई विद्रोह को इनके उपन्यास 'आवॉ ' में चित्रित हुआ है । विद्रोह की धधकती ज्वाला मुखी के रुप में ' नमिता ' आवॉ की नायिका के रुप में अवतरित हुई है । वह अपने एक प्रेमी को दिक्कारकर दुसरा चुन लेती है । उपन्यास की अन्य पात्र विमलाबेन और शाहबेन के चरित्र अपनी कमजोरियों के बावजूद पाटक को आकर्शित करते हैं ।

'ममता कालिया' साठोत्तरी कालीन सामाजिक यथार्थ को सहज और विस्वसनीय शिल्प में प्रस्तुत करने की कलाकार माना जाता है । वह एक ऐसी कथाकार है, जो सिर से पैर तक आधुनिक विचारधारा में रंगी हुई दिखाई देती है । नारी–जिवन के आंतरिक तथा बाय स्वरुपों को उटाया हैं । उन्होंने निम्न मध्यवर्ग नारियों की समस्याओं तथा पुरुषों की अहं भावना का चित्रित करने का प्रयास किया है । 'नरक–दर–नरक' 'एक पत्नी के नोट्स', 'बेघर', 'दौड तथा दुक्खम सुक्खम' यह उपन्यास ममता जी को हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में साठोत्तरी उपन्यास लेखिका के रुप में बहु चर्चित बनाया हैं । 'बेघर' ममता जी का यह उपन्यास पुरानी मान्यताओं के आधार पर एक स्त्री के कुँवारेपन के गलत धारणा पर आधारित एक स्त्री की कहानी है । विवाह की पहली रात को संजीवीनी से संभोग के पस्चात परमजीत अपनी पत्नी को शक की नजर लगता है । इनके अनुसार स्त्री वही पूरी तरह पवित्र होती है, जो सुहाग रात में संभोग के समय दर्द से पीडित हो रक्तश्राव हो किन्तु संजीवनी के साथ संभोग के समय ऐसा कुछ भी नही हुआ । परमजीत को लगता है कि पत्नी कई पुरुषों के साथ शारिरिक संबंध स्थापित कर चुही है । इसके बाद 'स्मा' उसके जीवन में आती है । वह पुरानी रीति–रिवाजों और संस्कारों में विस्वास रकनेवाली है । इनके बारे में जानते ही अन्त में परमजीत को पस्छाताप होता है और उसका मन अपराधि बोध की भावना से घिर जाता है ।

'मेहरुन्निसा परवेज' जी ने हिन्दी कथा साहित्य में मुस्लिम मध्यवर्गिय चेतना की कथा लेखिका के रुप में अपना महत्वपूर्ण स्थान निबाई है । उन्होंने बडी सरलता और ईमानदारी से जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थ वादी चित्रण किया है । इनके उपन्यासों में नारी–जीवन से सम्बधित अनेक समस्याओं को कई रुपों में चित्रित हुआ हैं । 'उसका घर', 'ऑखो की दहलिज', 'कोरजा' इनके बहुचर्चीत उपन्यास रहे हैं। 'कोरजा ' उपन्यास की सबसे सशक्त नारी ' नानी मॉ ' है । वह सहृदय, सहनशील, संवेदनशील तथा सहज स्वभाव की बुढिया है । मजबूरी में वह अपने गिरवीं रखे मकान के बदले अपनी विधवा बेटी 'नसीमा' को मुनीम की हवस का शिकार होते देखती है । लेखिन कुछ नही कर पाती । नसीमा कहती है कि ' मॉ रोज पूजा में ढेरों उलाहने भगवान को देती है और में खडी उन उलाहनों को वापास मॉग लेती हूँ ।' दुःख सहते–सहते ऐसी आदत पड गई है की अगर अब एक दिन भी वह हमसे जुदा हुआ तो घबराहट होने लगती है । ''[1] इस तरह मेरुन्निसा परवेज ने मुस्लिम नारियों के दुःचा–दर्द का बयान उनकी छटपटाहट का मार्मिक चित्रण किया है । 'उसका घर' उपन्यास की ऐलमा को अपने स्वर्थि भाई के बॉस के सामने विवश होकर बार–बार समर्पण करना पडता है । ऐलमा की बुआ उस पर तरस खाकर कहती है – ''तू कब तक सहेगी ऐनी, मैं जानती हूँ तु कभी विरोध नही करेगी । तेरा इतना सुंदर शरीर यह कष्ट उठाने के लिए नही है ।'' [2]

'पिरुपमा सेवती ' जी ने अपने उपन्यासों में नारी द्वंद्व तथा बदलती हुई नैतिक मान्यताओं का चित्रण किया हैं । इनके उपन्यास ' बॅटता हुआ आदमी ', ' मेरा नरक अपना है', 'पतझड की आवजें ' में नारी के अकेलेपन की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया हैं । आधुनिक नौकरीपेशा नारियों के व्यक्तिगत जीवन का चित्रण इस उपन्यास में प्रस्तुत होता है । अनुभा, सुनील तथा उशा यह तीनों स्त्रियॉं अपने एकांकी जीवन से त्रस्त है । यह तीनों को अकेलापन उन्हें अस्थिर बना देता हैं । सुनीला का कहना है कि ''इतना तो है कि ऐसा कोई नही मिला, जिसे मै एक महीने से ज्यादा बर्दाश्त कर सकूँ । सो आई एम स्टिल सिंगल ।''[3] इसी प्रकार ' मेरा नरक अपना है ' की आशा, शीला, तथा अनिला भी स्वच्छंद जीवन जीने के पक्ष में हैं । भले ही वह स्वच्छंद जीवन के समान क्यों न हो । ' बॅटता हुआ आदमी ' फिल्मी जगत् की उलझानों, संघर्श और जटिलताओं पर आधारित हैं । सुनंदा, मंजू और अनिता यह तीनों स्त्रियॉं उलझानों की शिकार हैं । मंजू का फिल्मी पति दूसरी औरत के संपर्क में आता है । अनिता का प्रेमी किशोर गरीबी के कारण ऋण का बोझ से दब जाता है । फलस्वरुप वह अनीता स्वार्थ के कारण उसे अनैतिक कार्य करने पर मजबूर कर देती है । सुनंदा की पारिवारिक समस्याऍं उसे फिल्मी संसार में आने को मजबूर कर देती हैं ।

' मन्नू भंडारी ' जी ने नारि–जीवन से संबंधित तत्कालिन राजनीतिक, सामाजिक स्थितियों का चित्रण अपने उपन्यासों में वेक्त किया हैं । 'महाभोज', 'एम इंच मुस्कान' में मुख्य रुप से तीन पात्र हैं– अमर, रंजन और अमला । समस्त कथानक में इन तीनों पात्रों की परिस्थितियों, मनः स्थितियों तथा कियाकलापों का चित्रण हुआ हैं । ' आपका बंटी' आधुनिक सुशिक्षित पति–पत्नी के अहं के टकराव तथा तनावों से उत्पन्न स्थितियों के बीच संबंध–विच्छेद की भूमिका का प्रामाणिक दस्तावेज हैं । इस उपन्यास में लेखिका ने बंटी को तलाक शुदा मॉ–बाप की उपेक्षित संतान बताया है । उसकी मम्मी 'शकुन' कॉलेज की प्रिंसिपल है । पिता 'आजय बन्न' डिवीजन मैनेंजर है । दोनों का पारिवारिक जीवन तनावपूर्ण हैं । शकून के मन की कसक इसका प्रमाण है – ''सच पूछा जाय तो अजय के साथ न रह पाने का दंश नही है यह, वरन् अजय को हरा पाने की चुभन है यह, जो उसे उठते–बैठते सालती रही है। ।'' [4] 'एक इंच मुस्कान' इस उपन्यास को मन्नु भंडारी ने अपने पति राजेंद्र यादव के साथ मिलकर लिखा है । रंजना, अमर और अमला यह उपन्यास के तीन प्रमुख पात्र हैं । इनमें अमर के मनोविज्ञान को राजेंद्र यादव ने और रंजना तथा अमला की मानसिकता को मन्नू भंडारी ने अपनी कलम से शब्दशब्द किये हैं । अमर एक लेखक हैं, उसके एक ओर रंजना का प्यार और समर्पित पत्नीत्व है, तो दूसरी ओर अमला की मुसकन है, जो उसमें मुक्ति की छटपटाहट भरकार सृजन–प्रेरणा देती है । इसी कारण से रंजना निराश होकर उसे छोकर चली जाती है। उधर रहस्मयी ' आला ' भी एक दिन जीवन से उभकर आत्म हत्या कर लेती है ।

'उषा प्रियंवदा ' ने अपने उपन्यास में भारतीय और पाश्चात्य परिवेश के नारी–जीवन को उजागर किया है। सामाजिक संबंध तथा पारिवारिक विघटन

को उषा जी ने अपने उपन्यासें में दर्शाया हैं । 'पचपन खम्भे लाल दीवारें ', 'रुकेगी नहीं राधीका ', 'शोशयात्रा और अंतर्वशी ' इस उपन्यासें में प्रमुख रुप से नारी मनोविज्ञान रहा है । इन में आधुनिक स्त्री की समस्याओं को स्पष्ट रुप से देखने को मिलता हैं । विशेषकर उच्च तथा मध्यवर्ग से संबंधित नारी अपने व्यक्तित्व को निखारने तथा बनाने के प्रति सतर्क हैं । 'रुकेगी नहीं राधीका' में ' राधीका' के सुसंस्कारित जीवन तथा पारिवारिक विसंगतियों को चित्रित किया गयाहैं । 'सुशमा और राधीका' दोनों स्त्रीयॉं अपने अस्तित्व की प्राप्ति के लिए संघर्ष करती प्रतीत होती हैं । डॉ. पारुकांत देसाई के अनुसार– '' आधुनिक कथा लेखिकाओं में उषा जी की गणना अग्रिम पंक्ति में हाती हैं । उनके साहित्य में आधुनिक जीवन की ऊब, छटपटाहट, संत्रास, अस्तित्व–बोध एवं अकेलेपन की भावना को प्रमुख स्वर मीला है ।''[5] पचपन खम्बे लाल दीवारें की नायिका सुशमा गरीब परिवार की एक नौकरीपेशा युवती है । मर्यादा और समाज के डर से वह अपने प्रेमी 'नीला' को भी त्याग देती है तथा अंत तक द्वंद्व में फॅसी ऑसू बहाती हुई कहती है कि 'ये कॉलेज, ये खंभे मेरी डेस्टिनी हैं, मुझे यहीं छोड दो ।''[6] वह इस तरह आत्म–पीडा भोगती हुई अपना जीवन व्यतीत करती है । ' अंतर्वशी ' में बनारस की लडकी अमेरीका युवक से विवाह कर विदेश पहुॅचती है । संबंधो में टंडेपन के कारण पति ' शिवेश ' को छोडकर ' राहुल' के पास चली जाती है । इसतरह उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में पति–पत्नि और प्रेमी–प्रेमिका के बनते–बिगडते संबंधों के अतिरिक्त स्त्री पुरुष में दाम्पत्येत्तर संबंध, अविवाहित स्त्री–पुरुष के बीच का संबंध और आधुनिक युग में मानवी संबंधों के नये रुप उभरकर आये हैं ।

'कृष्णा सोबती' जी साठोत्तरी महिला–लेखिकाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती है । उन्होंने नारी–जीवन से संबंध चार बहुचर्चित उपन्यासों का रचना की हैं । ' सुरजमुखी अॅधेरे के 'तिन पहाड ', 'डार से बिछुडी', 'मित्रो मरजानी' इन उपन्यासों में नारी–जीवन की विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया गया हैं । 'सूरजमुखी अॅधेरे के ' यह नारी जीवन की भयावह पीडा का दस्तावेज है । नायिका 'रत्तिका' एक आधुनिक नारी होते हुए भी आत्मपीडा एवं कुंठाग्रस्त है । यौवनावस्था में वह बलात्कार की शिकार होती है । जवानी में अनेक पुरुषों से संबंध स्थापित करने के पश्चात भी किसी में अपना सच्चा समर्पण न कर सकी । लेखिका के अनुसार '' उसकी लडाई किसी से नहीं, रति की खुद से है ।''[7] रित्तिका कुंठा के कारण मनोरोगी बन जाती है तथा पाठकों की सहानुभूति प्राप्त करती हैं । 'तिन पहाड' उपन्यास की 'जय' आत्मपीडा तथा भावुक मनोवैज्ञानिक स्त्री है । इन के जीवन में अनेक समस्याऍं घर कर लेती हैं। जब 'जया ' यौवनकाल में ही 'श्रीदा 'पर मोहित हो जाती है । श्रीदा का प्रवेश उसकी मृत्यू का कारण बनता है । ''अब कहॉं लौटना होगा श्रीदा ।''[8] कहकर जया मृत्यु हो जाती है।

'शिवानी ' जी ने लगभग तेरह उपन्यासों का रचना की हैं । 'विशकन्या', ' मायापुरी ', ' चौदह फेरे', 'कौंजा', 'रतिविलाप', आदि उपन्यासों में नारी–जिवन की प्रमुख समस्याओं को प्रस्तुत करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य निबाई है । जादातर भारतीय ग्रामीण जीवन, मानवीय संवेदना, भारतीय संस्कृति में निष्टा तथा नारी के सामाजिक अस्तित्व का विश्लेशण किया हैं । शिवानी के अनुसार '' मैं ने अपने अधिक संख्यांक चरित्र वास्तविक जीवन से ही लिए हैं । मैं ने सुने–सुनाए चरित्रों पर कभी कलम नहीं चलाई । ..... भैरवी में मैं ने अघोरी साधुका सच्चा वर्णन किया है ।''[9] ' श्मशांन चंम्पा ' मे स्त्री के संघर्षमय जीवन का चित्रण हैं । चंपा मेडीकल पडती हुई अनेक समस्याओं को झुझाती हुई अपने जीवनको श्मशान की तरह समझती है । ' रतिविलाप ' में पुरुष प्रधान समाज में स्त्री पर होनेवाले अत्याचार का विरोध और स्त्री की विद्रोह की मार्मीक कथा है । शिवानी ने मनोवैज्ञानीक शैली में भी लिखा है, जैसे– 'माणिका' उपन्यास में नायिका नलिनी जीवन भर अविवाहित रहकर प्रकृति के विरुध्द अपनी काम भावानाओं को दबाकर त्यागमय और उदार जीवन व्यतित करती है ।

इस्माली रीति–रिवाजों को प्रस्तुत करने वाली 'नासिरा शर्मा ' समकालीन हिन्दी कथा साहित्य की प्रमुख लेखिका है । इनके उपन्यास इस्लामी समाज में नारी की स्थिति – गती को लेकर प्रस्तुत करता ह। । नासीरा जी को हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं की जानकारी हैं । इरानी, अफगानीस्तान, इराक और पाकिस्तान की राजनीतिक, बौध्दिक स्थितियों पर भी अपनी लेखनी चलाई है । हिन्दी में इनके लेखन की विशिष्टता यह है कि वे भारतीय समाज में मुस्लिम की स्थिति एवं विशमताओं को मार्मिक ढंग से प्रसुत करती हैं । 'शालमली', 'जिन्दा मुहावरे', ' सात नदियॉं एक समंदर ', ' अक्षवट और टीकरे की मंगनी ' इनके प्रमुख उपन्यास हैं। ' शाल्मली ' मे में यह दर्शाया गया है कि पति के रुप में हर पुरुष अपनी औरत को गुलाम समझाता है । नारी मुक्त आंदोलन, शिक्षा, आर्थिक स्त्री की बौध्दिक क्षमता टूटते–बनते पति–पत्नी का संबंध और इन सबके बीच महानगरिय सभ्यता के दबाव आदी समस्याओं को विस्तार से वेक्त किया गया हैं ।

मैत्रेयी पुष्पा थोडी ही समय में अपनी अलग पहचान बनाने वाली नयी पीढी की चर्चीत कथा लेखिका है । उनके उपन्यास में अंचल विशेष की बोली और परिवेश की प्रधानता होने के कारण उन्होंने अंचलिक कथाकार के रुप में स्थापित करने की कोशिश भी की जाती है । अंचल विशेश की ग्रामीण नारी की जीवन का हृदय स्पर्शि चित्रण इनके उपन्यासों में चित्रांकन किया गया हैं । 'चाक', 'इदन्नमम्', 'अगन पाखी', 'अल्मा कबूतरी', आदि उपन्यास हिन्दी कथा साहित्य में अपना विशेष महत्व रखते हैं । 'इनन्नमम्: में बुंदेलखंड के एक ग्रामी की विधवा स्त्री 'बऊ' की त्रासदी स्थितियों का चित्रण किया गया है । इसमें बऊ की विधवा बहू की दयनीय स्थिति को भी वेक्त किया गया है । ' चाक' में भी एक ग्रामीण स्त्री का विद्रोह स्वर प्रस्तुत है । अतरपुर गॉव की औरतें पुरुषों के अहं, शील और सतीत्व की रक्षा के नाम पर बलि चढा दी जाती है । 'रमदेई ' कुऍं में कूद जाती है और ' नारायणी ' नदी में समाधिक ले लेती है । इस प्रकार लेखिका ने अपने उपन्यासों में अधिकांश ग्रामीण नारी–जीवन की समस्याओं को यथार्थ रुप से अभिव्यक्त किया हैं ।

हिंन्दी साहित्य के क्षेत्र में ' मालती जोशी' जी ने भी महत्वपूर्ण कार्य किया हैं । मान्नु भाशा मराठी होते हुए भी वह हिन्दी में साहित्य सृजन किया । बहुमूखी प्रतिभा की भानी मालती जी प्रतिष्टित कथाकार के साथ–साथ कहानीकार, रेडियो नाटककार, संगीतज्ञ तथा अनुवादिक भी है । अपने साहित्य में मध्यवर्गीय परिवार के टूटते, बिखरते संबंधो को प्रेम और विवाह के रुप को उन्होंने उजागर किया है । ''पाशाण युग, ' विस्वास गाथा ', ' पराजय ', : रागविराग :, ' शोभायात्राः, 'परिणय ', 'ज्वाला मुखी के गर्भ में ' आदि इनके उपन्यास हैं । 'पाशाण युग ' के अंतर्गत लेख्कि ने एक त्यागमयी विदवा नारी का चित्रण किया है । नीरु के अंतर्मन की पीडा को प्रेम और सहयोग के अभाव में जीवन के भार को ढोती हुई अकेली ही जीवन से लडती है । ' राग–विराग' में अधीकतर विखरते एवं टूटे हुए दांपत्या जीवन और समकालीन मध्यवर्गीय शहरी नारी के जीवन की इन तमाम समस्याओं का चीत्रण मिलता हैं ।

बुध्दि प्रधान कथा–साहित्य की रचयिता के रुप में ' राजी सेठ' प्रसिध्द है । इन्होंनें पारिवारिक क्षेत्र में नए ढंग से लेखनी चलाई है । नारी मनोविज्ञान एवं नारी जिवन में व्याप्त अकेलापन, विसंगति आदि को प्रस्तुत करना इनका रचनात्मक लक्ष्य रहा हैं । इनके उपन्यास 'तत्सम ' मे एक विधवा नारी की कोमल भावनाओं तथा स्त्री का मानसीक द्वंद्व का चित्रण हुआ है । उपन्यास की नायिका 'वसुधा 'पढी–लिखी और समझदार स्त्री है । इनके पति निखिल की मृत्यू के बाद पति के यादों में अपनी जीवन बिता देना चाहती है । किन्तु उसके घर वाले जानते है कि एक युवा विधवा की समाज में क्या इज्जत होती है । इस स्थितियों को जानते हुए वसुधा का पुनः विवाह करना चाहते हैं। वसुधा विवेक के सम्पर्क में आकर आकर्शित होती है। वह उससे विवाह करने का निर्णय भी लेती हैं , किन्तु विवेक स्वयं दु:ख से पीडित है । इसलिए वह उसको विवाह से इन्कार कर देता है । मन से टूट चुकी वसुधा एक बार फिर से आनन्द की तरफ खींचती है, लेखिन उसी समय विवेक का विवाह प्रस्ताव वसुधा को मिलता है तो वह असमंजस की स्थिति में आ जाती है। दो पुरुषों के बीच उलझी वसुधा का जीवन घुटन से भर जाता है । लेखिका ने एक नारी मन की अन्तः पीडा का मनोवैज्ञानिक धरातल पर चित्रण किया है ।

निष्कर्ष :

साठोत्तरी महिलाओं का उपन्यास साहित्य का परिचय यह सिध्द करता है कि महिला लेखन पर्याप्त संपन्न हैं । आज की सामाजिक विसंगतियों ने समाज में स्त्री के प्रति होनेवाले अत्याचार और उत्पिडन का गहरी संवेदनशीलता के साथ अंकन किया है । उन्होंने प्रेम के अलग–अलग रुपों का भी चित्रण किया है । समाजीक कथा आर्थिक समश्याओं की लहरो के बीच झुझती नासरी का चित्रण पर लेखिकाओं की दृष्टि विशेष रही हैं । अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की तलाश में संलग्न नारी को इन्होंने खोजा है और अपने रचनाओं में डाला हैं । अनेक कथाओं में विचार–पक्ष की एक अच्छी झलक दिखाई देती हैं । उनकी मर्मस्पर्शी कथाओं ने नारी को समाज में सम्मान और संरक्षण के साथ ही समता और स्वतंत्र का अधिकार दिया है । निस्चय ही समकालिन हिन्दी महिला कथा–साहित्य लेखन अत्यंत व्यापक, गहन एवं प्रभावशाली है ।

आधार ग्रंथ

1.म्हेरुन्निसा परवेज : कोरजा – पृ.सं. 221.
2.मेहरुन्निसा परवेज : उसका घर – पृ.सं. 74
3.निरुपमा सेवती : पतझड की आवाजें – पृ.सं. 20.
4.मन्नू भंडारी : आपका बंटी – पृ.सं. 39
5.डॉ. पारुकांत देसाई : हिंदी उपन्यास साहित्य की विकास –
: परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास – पृ.सं. 243

6.उषा प्रियवंदा : पचपन खंभे लाल दीवारें – पृ. सं. 119.
7.कृष्णा सोबती : सूरजमुखी अँधेरे के – पृ.सं. 89.
8.कृष्णा सोबती : तीन पहाड – पृ.सं. 126.
9.शिवानी : एक थी रामरती – पृ.सं. 10–11.